

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक २ मार्च, २०१४ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१४

समय : सुबह ९.०० से ११.१५

कुल गुणांक : ७५



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ :-

- मुख्य परीक्षा के दिन वर्गाखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।
- दायीं ओर दिए गए अंक प्रश्न के गुण दर्शाते हैं ।
- सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे ।
- मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे ।
- परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
- परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।
- परीक्षा खंड के बाहर और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
- परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	

विभाग-१, कुल गुण (३३)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	

विभाग-२, कुल गुण (३२)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१३ (१०)	

परीक्षक के हस्ताक्षर

मोडरेशन विभाग माटे ४

गुण शब्दोंमां
चेकर - नाम

विभाग - १ : नीलकंठ चरित्र - तृतीय संस्करण, नवम्बर - २०११

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)

१. "यहाँ तो आपके तप के पुण्यों से मैं आया हूँ ।"

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

.....

२. "यदि अन्न तैयार नहीं है तो कोई बात नहीं, मैं चलता हूँ ।"

३. "आप कब आये ?"

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) (६)

१. लाखा समझ गया कि वह दिव्यपुरुष उसे छोड़कर पार चले गए ।

.....

.....

.....

.....

२. बुटोलनगर के वैरागी बाबाओं के मन में ईर्ष्या की आग धधकने लगी ।

३. सत्रघर्मा राजा ने महंत के पास शालिग्राम की माँग की ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) (५)

१. घोर जंगल में प्रवेश

२. रामानंद स्वामी के साथ मिलन

३. त्यागी को आकाशवृत्ति या अजगरवृत्ति ही चाहिए

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । (५)
१. लोज में जन्माष्टमी के दिन पालने में सभी को किस के दर्शन हुए ?
.....
.....
२. भविष्य की बात सुनी तब अमीचंद ने नीलकंठ वर्णी को क्या कहा ?
३. श्रीपुर में किसने और क्यों तप किया ?
४. नीलकंठ वर्णी किसको साथ लेकर शील गाँव गये ?
५. नीलकंठ वर्णी ने मोहनदास को भयंकर निर्जन वन में निकलने का क्या कारण बताया ?
- प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)
- सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।
१. नीलकंठ वर्णी ने गोपालयोगी से कौन कौन सी सिद्धि प्राप्त की ?
(१) ब्रह्मविद्या (२) अक्षरविद्या (३) अक्षिविद्या (४) हस्ति
२. नीलकंठ वर्णी के बायें पैर के चिह्न ।
(१) मीन (२) व्योम
(३) वज्र (४) चक्र
- प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । (४)
१. कुकड गाँव के दरबार के सेवक थे ।
२. नीलकंठ वर्णी ने पर्वत पर जाकर का कल्याण किया ।
३. अर्ध रात्रि के समय पर आया और की प्रदक्षिणा करने लगा ।
४. कृष्ण पक्ष की पंचमी को नीलकंठ वर्णी ने स्वामी के प्रति प्रार्थना पत्र लिखा ।
- विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग- १ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७**
- प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)
१. “यदि तुम स्वामिनारायण भगवान का आश्रय लो तो हम तुम्हारी रसोई जीमेंगे ।”
कौन कहता है ? किसको कहता है ?
कब कहता है ?
.....
.....
२. “बड़े धुनी हैं आप लोग !”
३. “अलौकिक आश्चर्य बताएँगे, तुम उनकी शरण में जाना ।”
- प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) (४)
१. श्रीजीमहाराज अँधेरे में वड़ताल से खो गये ।
.....
.....
.....
२. जेठा भगतने काषाय वस्त्र धारण किए ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । (४)

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छू के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र देसाईभाई चारागाह में काम करते समय सर्पदंश होने से धाम पधारे । बाद में भगतजी महाराज के साथ आकर आशाभाई को जय स्वामिनारायण कहा ।

१. सद्गुरु शुकानन्द स्वामी : गुणातीतानंद स्वामी का निवासस्थान जो अक्षरकक्ष था, बिलकुल उसके सामने ही ब्रह्ममुनि का कमरा था ।

उ.

२. सद्गुरु देवानन्द स्वामी : उनके पद्यों में ज्ञान का भाव कूट कूट कर भरा मिलता है । कहीं कहीं उलाहना भी हैं । इसलिए उनके कीर्तन-पद देवानन्द स्वामी का बेरखा नाम से आश्रम में प्रसिद्ध हैं ।

३. स्वामी यज्ञप्रियदासजी : पुरुषोत्तमपुरा से एक कोस की दूरी पर रढु में आशाभाई रहते थे । उनकी भूमि भी वहीं थी ।

४. भक्तराज जीवुबा : जीवुबा के दूजे तीन नाम : 'मोटीबा, पूनमबा, विजयाबा थे ।'

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । (१०)

१. सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण : अवतारों के दर्शन
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती)अप्रैल - २०१३, पा. नं. १० से ११)

२. बी.ए.पी.एस. : युवाप्रवृत्ति के सितारे
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती)फरवरी-मार्च - २०१३, पा. नं. ४६ से ४७, ६३)

३. नेशनल बाल कन्वेन्शन २०१३ : नोर्थ अमरिका
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती)अगस्त - २०१३, पा. नं. १६ से २३)

()

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।

<http://www.swaminarayan.org/satsangexams/pastpapers/index.htm>

આગામી વર્ષે ૨ માર્ચ, ૨૦૧૪ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા **પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1st January, 2014ના રોજ) મુકાશે.** નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી - List of Pre-test Essays

પ્રવેશ - ૧ (Pravesh-1)

૧. સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ : અવતારોના દર્શન (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - એપ્રિલ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૧૦ થી ૧૧)
1. Supreme Bhagwan Swaminarayan: Darshan of the Avatars.
૨. બી.એ.પી.એસ. : યુવાપ્રવૃત્તિના સિતારા (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ફેબ્રુઆરી-માર્ચ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૪૬ થી ૪૭, ૬૩)
2. Stars of BAPS Youth Wing.
૩. નેશનલ બાલ કન્વેન્શન ૨૦૧૩ : નોર્થ અમેરિકા (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ઓગસ્ટ - ૨૦૧૩, પા.નં. ૧૬ થી ૨૩)
3. National Bal Convention 2013, North America.

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૪ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાંચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો છ માસ અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૪ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) મોટાભાગે ત્રણ - ચાર વર્ષ દરમ્યાનના સમયગાળામાં પ્રકાશિત થયેલ 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2014.

સત્સંગ પ્રવેશ

(૧)

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ : અવતારોનાં દર્શન

Supreme Bhagwan Swaminarayan : Darshan of the Avatars

કોણે જોયા છે રામ ? કોણે જોયા છે કૃષ્ણ ? કોણે જોયા છે શિવ ? કોણે જોયા છે નરસિંહ ? કોણે જોયા છે આ સર્વે અવતારોને કે ઈશ્વરોને ? સદીઓથી નાસ્તિકો સવાલ કરતા.

ન કોઈની પાસે ઉત્તર હતો, ન ખાતરી હતી.

પરંતુ ૧૮મી સદીના પૂર્વાર્ધના ગુજરાતમાં હજારો લોકો પાસે તેનો ઉત્તર હતો, તેની પ્રતીતિ હતી અને તેઓ વિશ્વાસભરી છાતીએ સૌને કહેતા : હા, અમે નીરખ્યા છે રામ, કૃષ્ણ અને સર્વે અવતારોને. અમે નજરે દીઠા છે શિવ અને નરસિંહને. અમે સગી આંખે જોયા છે વીર અને મહાવીરને.

ક્યાં, ક્યારે અને કેવી રીતે ?

ઉત્તર હતો : ભગવાન સ્વામિનારાયણની કૃપાથી અમે નીરખ્યા પ્રભુના સર્વે અવતારોને !

હા, એ નિતાંત સત્ય હતું. હજારો લોકોના સ્વાનુભવની સાબિતી હતી. વાત આમ હતી.

ભગવાન સ્વામિનારાયણના પ્રાગટ્યનો મુખ્ય હેતુ હતો - પોતાની શુદ્ધ અને સર્વોપરિ ઉપાસના પ્રવર્તાવી અનેકનું કલ્યાણ કરવું. તેથી તેમણે જે પોતાનાં વચનો, કાર્ય અને ઐશ્વર્ય દ્વારા પોતાના સર્વોપરિ સ્વરૂપનો પરિચય અનેકને કરાવ્યો. અનેક મુમુક્ષુઓ વિવિધ સંપ્રદાયોમાંથી આવતા હોવાથી તેમને પ્રતીતિ કરાવવાનો એક ઉપાય હતો - એ મુમુક્ષુઓને જેમાં પ્રતીતિ છે તે ઈષ્ટદેવનાં દર્શન પોતાના સ્વરૂપમાં કરાવવાં. તેથી એક વખત શ્રીહરિએ ગઢપુરથી હરિભક્તો પર પત્રમાં લખ્યું હતું : 'ભક્તની રુચિ હોય તેવાં ધામ ને તેવી મૂર્તિ હું તેને દેખાડું છું.' (હરિચરિત્રામૃતસાગર : ૧૫/૭૨)

સંપ્રદાયના ઇતિહાસમાં તેની અનેક વિગતો સંગ્રહાયેલી પડી છે. તેમાંથી કેટલાક સત્ય પ્રસંગોનું આચમન કરીએ.

૧૮ વર્ષની વયે નીલકંઠવર્ણી સ્વરૂપે ભગવાન સ્વામિનારાયણ અખિલ ભારતની પદયાત્રા કરીને ગુજરાતમાં પધાર્યા ત્યારે ઠેર ઠેર તેમણે પોતાના સ્વરૂપમાં અવતારોનાં દર્શન કરાવ્યાં હતાં. શ્રીકૃષ્ણે દેહત્યાગ કર્યો હતો એ પ્રભાસક્ષેત્રના ભલકા તીર્થમાં એક વિપ્રને મુરલીમનોહરરૂપે દર્શન આપ્યાં, જૂનાગઢમાં દામોદર કુંડ પાસે ત્યાંના પૂજારીને દામોદર સ્વરૂપે દર્શન દીધાં, ગિરનાર ચઢતા ગૌમુખી ગંગામાં સ્નાન કરતા વર્ણીને બાવાઓએ રોક્યા ત્યારે વામનસ્વરૂપે દર્શન આપ્યાં, ગિરનાર પર દત્તાત્રેયની ટૂંકે ૧૨ વર્ષથી દત્તાત્રેયજીનાં દર્શનની ઈચ્છાથી તપ કરતા એક તપસ્વીને ગુરુદત્તરૂપે દર્શન આપ્યાં, ગિરનારની તળેટીમાં હાટકેશના મંદિરે શિરો-પૂરી જમાડનાર એક નાગરને શિવસ્વરૂપે દર્શન આપ્યાં !

લોજમાં પધાર્યા પછી ત્રીજે જ દિવસે જન્માષ્ટમી ઉત્સવ હતો. તેમાં સૌ આશ્રમવાસીઓને પારણે ઝૂલતા બાલકૃષ્ણ સ્વરૂપે દર્શન દીધાં.

નીલકંઠમાંથી સહજાનંદ સ્વામી અને સ્વામિનારાયણ ભગવાન તરીકે બિરાજ્યા બાદ પણ તેમણે અનેકવાર અનેકને પોતામાં વિવિધ અવતારોનાં દર્શન કરાવ્યાં.

ગઢડાના ગામધણી એભલખાયર દ્વેષીઓની કાન ભંભેરણીથી શ્રીહરિને તલવારથી મારવા ગયા ત્યારે શ્રીહરિએ તેમને પોતાના સ્વરૂપમાં શંખ, ચક્ર, ગદા, પદ્મ સહિત ચતુર્ભુજ નારાયણની મૂર્તિનાં દર્શન કરાવ્યાં.

એભલખાયરને એવો નિયમ હતો કે ઘેલાના સામે કાંઠે આવેલા નીલકંઠ મહાદેવનાં દર્શન વિના જમવું નહીં. એક વાર ચોમાસામાં એવું પૂર આવ્યું કે સાંજ સુધી તેમનાથી દર્શને ન જવાયું. તેથી તેઓ જમ્યા નહીં. ગઢડામાં ઉગમણા બારના ઓરડાની ઓસરીએ બિરાજેલા શ્રીહરિએ એભલખાપુને પોતાના સ્વરૂપમાંથી શંકરના સ્વરૂપ પ્રગટ થતાં દેખાડ્યાં. ત્યારબાદ બાપુએ શ્રીહરિનાં દર્શન વિના ન જમવાનો નિયમ લીધો.

એક વાર ગઢડામાં ૨૦૦ ખાખી બાવાઓને શ્રીહરિએ પાકાં સીધાં આપ્યાં. બાવાઓ કહે, 'તમે ભગવાન છો ?'

શ્રીહરિ કહે, 'હા.'

'તો તમે અમને નરસિંહરૂપે દર્શન આપો.'

શ્રીહરિના સ્વરૂપમાં દિવ્ય ઐશ્વર્યનું દર્શન થયું અને સૌને નરસિંહનાં દર્શન થયાં અને તે સૌ બાવાઓ શ્રીહરિના આશ્રિત બન્યા. (શ્રીહરિચરિત્રચિંતામણિ : ૨/૫૨)

તત્કાલીન ગુજરાતના પ્રખ્યાત વિદ્વાન દીનાનાથ ભટ્ટને સારંગપુરમાં શ્રીહરિના સ્વરૂપમાં નરનારાયણનાં દર્શન થયાં. એટલું જ નહીં, નારાયણ ઋષિએ દીનાનાથ ભટ્ટને કહ્યું, ‘શ્રીહરિ ગમે તેમ ચરિત્ર કરે, તોપણ તેઓ સર્વે અવતારના કારણ છે, એમ માનવું. એની આગળ અમારી શી વિસાત?’ (હરિ-ચરિત્રામૃતસાગર : ૨૩/૪૪)

કચ્છમાં ભયાઉમાં તુલસી રામાયણના અભ્યાસી એક લુહાર ભક્તને શ્રીહરિના સ્વરૂપમાં રામચંદ્રનાં દર્શન થયાં. ત્યારબાદ સમાધિમાં અક્ષરધામ દર્શન કરાવી શ્રીહરિએ તેને કહ્યું, ‘અમે સર્વોપરિ ભગવાન પ્રગટ થયા છીએ પણ કોઈને એ વાત કરતા નથી.’ (હરિચરિત્રામૃતસાગર : ૧૦/૨૯)

આલાવાડમાં મૂળીમાં માંડવરાયના મંદિરે મોતીગર બાવાને તથા ગરાસિયાને શ્રીહરિએ પોતાના શરીરમાંથી નીકળતા તેજના સમૂહ સાથે ચતુર્ભુજ કૃષ્ણરૂપે દર્શન દીધાં. (સદ્ગુરુ શ્રી તદ્રૂપાનંદ સ્વામીની વાતો : ૧૨)

કચ્છના પ્રખ્યાત વેદાંતી જૈયા ખત્રીએ એક દિવસ સંકલ્પ કર્યો કે જો સ્વામિનારાયણ ભગવાન હોય તો મને સવા શેર જલેબી ખવડાવે. એક હરિભક્ત જલેબીનો તાસ લઈને આવ્યા. શ્રીહરિએ જૈયાને બોલાવ્યો અને જલેબી જમવા આપી. જૈયો ખત્રી જલેબી જમવા માંડ્યો. સવા શેર જલેબી તેણે ખાધી એટલે શ્રીહરિએ તેનો હાથ પકડ્યો ને કહ્યું, ‘તારી સવાશેર જલેબી થઈ ગઈ. હવે વધારે ખાવી હોય તો ખાઓ.’

શ્રીહરિના આ પ્રભાવથી પ્રભાવિત થતાં જૈયાએ પૂછ્યું, ‘૧૦ કે ૨૦ અવતાર માંહેલા તમે કયા ભગવાન છો?’

શ્રીહરિ કહે, ‘હું તો ૧૦, ૨૦, ૨૪ કે ૬૦ અવતાર માંહેલો પણ નહીં.’

જૈયો કહે, ‘૬૦ અવતાર વળી ક્યાંથી?’ શ્રીહરિએ તેને પોતાના સ્વરૂપમાં ૬૦ અવતારનાં દર્શન કરાવ્યાં ! જૈયાને શ્રીહરિમાં સર્વોપરિ ભગવાનપણાની પ્રતીતિ થઈ. (શ્રીજીમહારાજ પ્રગટની વાતો : ૬૭)

શ્રીહરિએ અન્ય ધર્મોનો પણ તેમના ઈષ્ટદેવનાં દર્શન કરાવ્યાં. એક વાર કારિયાણીમાં તળાવને કાંઠે શ્રીહરિ સભામાં બિરાજમાન થયા હતા ત્યારે બરવાળાથી બે જૈન સાધુઓ પૈકી એકને ૨૪ તીર્થંકરોનાં જુદાં જુદાં દર્શન કરાવ્યાં હતાં. (શ્રીજીમહારાજ પ્રગટની વાતો : ૧૬)

સંપ્રદાયના ઈતિહાસમાં આવી અનેક વિગતો નોંધાયેલી છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણનાં આવાં દિવ્ય ઐશ્વર્યોથી એમની હયાતીમાં જ લાખો હરિભક્તોને એક નિશ્ચય દૃઢ થઈ રહ્યો હતો કે જેમના સ્વરૂપમાં આવા અસંખ્ય અવતારોનાં દર્શન થાય છે તેવા શ્રીહરિ સર્વોપરિ અને સર્વ અવતારના અવતારી છે.

એટલે જ ભગવાન સ્વામિનારાયણને તેઓની હયાતીમાં જ લાખો લોકોએ આરાધ્યા હતા - સર્વોપરિ પરબ્રહ્મ સ્વરૂપે, એક સ્વાનુભૂતિભરી દૃઢ પ્રતીતિ સાથે ! ♦

(૨)

બી.એ.પી.એસ. : યુવાપ્રવૃત્તિના સિતારા Stars of BAPS Youth Wing

બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિના ૬૦વર્ષોની શાનદાર ઉજવણી એટલે એવા હજારો યુવાનોને બિરદાવવાનો અવસર,

જેમણે પ્રાણના ભોગે પણ બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિનાં પવિત્ર મૂલ્યોને જીવનમાં શોભાવ્યાં છે.

ભૌતિકયુગની આંધી વચ્ચે પણ સંયમ-નિયમ, સેવા, સંસ્કાર, આઘ્યાત્મિકતા વગેરેની અનુભૂતિ કરાવતા

બી.એ.પી.એસ.ના એ હજારો યુવાનો પૈકી કેટલાકની ગાથા મહોત્સવના મંચ પરથી પ્રસ્તુત થઈ હતી.

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના કૃપાપાત્ર અને બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિના એ સિતારાઓની પ્રેરક દાસ્તાન અહીં પ્રસ્તુત છે...

■ અંબારામ જાદવ : પ્રભુભક્તિ સાથે રાષ્ટ્રભક્તિ

અંબારામ જાદવ, બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિનો એક સંનિષ્ઠ યુવક. પ્રભુભક્તિ સાથે ભારતીય લશ્કરમાં ફરજ બજાવીને રાષ્ટ્રભક્તિ અદા કરતો એક નવજવાન. કારગિલ યુદ્ધ સમયે એક વૃંદના લીડર તરીકે ફરજ બજાવીને ભારત-વિજયમાં યશસ્વી ભૂમિકા ભજવનાર આ યુવાને કઠિન પરિશ્રમ અને યુદ્ધના માહોલ વચ્ચે પણ સ્વામિનારાયણીય નિયમોનું ચુસ્તપણે પાલન કર્યું હતું. નિષ્ઠા-પૂર્વક લશ્કરી ફરજ નિભાવતાં નિભાવતાં પણ આ યુવાને સન ૨૦૦૧માં ‘સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવ’ના ઉપક્રમે ૫,૦૦,૦૦૦ મહામંત્ર પણ લખ્યા હતા!

એક વાર ફરજ દરમ્યાન તાલીમના ભાગરૂપે અંબારામને સિક્કિમ જવાનું થયું હતું. વહેલી સવારથી મોડી રાત સુધી અંબારામને અહીં ખૂબ શારીરિક શ્રમ વેઠવાનો થતો. પરિણામે શરીરને યોગ્ય ખોરાક મળે તે જરૂરી હતું. પરંતુ એ અહીં ભગવાન સ્વામિનારાયણ આપેલા નિયમો અનુસાર શાકાહારી ખોરાક ન હોવાથી અંબારામને સતત સાત દિવસ સુધી ભોજન ન લીધું. સતત સાત દિવસ સુધી ભોજન વિના કરાયેલા કઠોર પરિશ્રમને કારણે અંબારામને અશક્તિ અને અન્ય રોગ

પણ સતાવવા લાગ્યાં. આ જોઈ તેના સાથીઓએ તેને મેડિકલ ચેકઅપ કરાવવા વિનંતી કરી. લશ્કરી તબીબે અંબારામને તપાસી ઈંડાં, માંસ અને દારૂનું સેવન કરવા જણાવ્યું. અંબારામે સપષ્ટતાથી ડોક્ટરને જણાવ્યું કે, ‘હું ભગવાન સ્વામિનારાયણનો ભક્ત અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો આશ્રિત યુવાન છું, તેથી ક્યારેય માંસાહાર-દારૂનું સેવન નહીં કરું.’

ડોક્ટરે અંબારામને આગ્રહભરી ચેતવણી આપી કે જો તમે માંસાહાર અને દારૂનું સેવન નહીં કરો તો તે વધુ જીવી નહીં શકો અને તે માટે હું જવાબદાર ગણાઈશ. પરંતુ ડોક્ટરની અપેક્ષાથી વિરુદ્ધ, અંબારામે તો એક પત્ર લઈને ત્યાં ને ત્યાં જ લખી આપ્યું: ‘જીવતા રહેવા માટે કોઈપણ હાલતમાં હું મદ્યપાન અને માંસનું સેવન નહીં જ કરું અને એમ કરવાથી મને કોઈપણ પ્રકારની મુશ્કેલી આવે તો, તેનો જવાબદાર હું પોતે જ છું, ડોક્ટર નથી.’

અંબારામની નિયમપાલનની દૃઢતા જોઈ ડોક્ટર અને સાથીઓ પણ નતમસ્તક થઈ ગયા. અંબારામની સંયમ-નિયમની દૃઢતાથી પ્રભાવિત થઈને એ લશ્કરી જવાનો ‘હેટ્સ ઓફ’ કહીને તેને મિલિટરી સન્માન આપતા હતા, ત્યારે અંબારામ, પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અને બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિને ‘હેટ્સ ઓફ’ કહી રહ્યા હતા, જેને કારણે હજારો યુવાનો હિંદુ ધર્મના પાયાના સંયમ-નિયમના પાઠ દૃઢ કરી રહ્યા છે. ◆

■ બ્રિજરાજસિંહ : પ્રાણતા ભોગેય બીજાની સેવા

તા. ૨-૩-૨૦૦૪ના દિવસે સાંજના ૬ વાગ્યાનો સમય હતો. બી.એ.પી.એસ.નો ૧૪ વર્ષીય સભ્ય બ્રિજરાજસિંહ મૂકેશસિંહ ચાવડા ઘરે જઈ રહ્યો હતો. તે સમયે સેક્ટર-૨૮માં ‘ચ’ ટાઈપના સરકારી આવાસ પાસે તેણે માનવમહેરામણ એકત્રિત થયેલું જોયું. પૂછપરછ કરતાં જાણવા મળ્યું કે, ત્રણ વર્ષનો એક બાળક ૮૦ ફૂટ ઊંડા અને સવા ફૂટ પહોળા બોરીંગમાં પડી ગયો હતો ! ફાયર બ્રિગેડના અધિકારીઓ આસપાસ ઊભેલા યુવાનોને પગમાં દોરડું બાંધીને ઊંડા બોરમાં ઊતરીને બાળકને બહાર ખેંચી લાવવા સમજાવી રહ્યા હતા. પરંતુ કોઈ તૈયાર ન થયું. ગાઢ અંધારું અને જ્યાં શ્વાસ લેવાનું પણ મૂશ્કેલ હતું એવા ઊંડા બોર-ખાડામાં ઊતરતાં કદાચ પગમાં બાંધવામાં આવેલું દોરડું તૂટી જાય તો ? એ સમયે ફાયરબ્રિગેડ ઓફિસરે બ્રિજરાજસિંહનો પાતળો બાંધો જોઈ તેને વિનંતી કરી. અને સૌનાં આશ્ચર્ય વચ્ચે બ્રિજરાજે તરત જ એ પડકાર ઝીલી લીધો. તેના પગમાં દોરડાં બાંધી ધીરે ધીરે તેને ઊંધે માથે બોર-ખાડામાં ઉતારવામાં આવ્યો. સાંકડા ખાડાની દીવાલને અથડાઈ-અથડાઈને બ્રિજરાજને પીઠ-ખભા અને હાથમાં ખૂબ ઈજાઓ થઈ, પરંતુ તેની પરવાહ કર્યા વિના બ્રિજરાજ ૮૦ ફૂટ નીચે રડી રહેલા બાળક સુધી પહોંચ્યો. બાળકને પોતાના હાથમાં પકડ્યો ને ધીરે ધીરે દોરડું ઉપર તરફ ખેંચાયું. બી.એ.પી.એસ.ના એક સેવાનિષ્ઠ યુવાનના સુરક્ષિત હાથે એક જીવન જાણે ઊર્ધ્વગતિ પ્રાપ્ત કરી રહ્યું હતું ! અંતે બાળકને બહાર લઈને બ્રિજરાજ બહાર આવ્યો ત્યારે સૌએ હર્ષોલ્લાસથી તેને વધાવી લીધો. બાળકના માતા-પિતા પાસે તો આભાર માનવા માટેના શબ્દો નહોતા. તેમણે પુરસ્કારના રૂપમાં મોટી રકમ આપવાની ઈચ્છા વ્યક્ત કરી. પરંતુ બ્રિજરાજે તેનો સવિનય અસ્વીકાર કર્યો અને ફક્ત આશીર્વાદની યાચના કરી. અપ્રતિમ સાહસ, શૌર્ય અને સેવાના બદલામાં ગુજરાત સરકાર તેમજ અન્ય ૧૪ પ્રતિષ્ઠિત સંસ્થાઓનાં સન્માનો પ્રાપ્ત કરનાર બ્રિજરાજને મન તો પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રસન્નતા એ જ સૌથી મોટું બહુમાન હતું. ◆

■ નીરલ-વિશાલ સોની : પરહિત કાજે સદા જાગ્રત...

બી.એ.પી.એસ.ના સંનિષ્ઠ યુવાન-બંધુઓ નીરલ અને વિશાલ ભૂપેન્દ્રભાઈ સોની મુંબઈમાં જે બહુમાળી ઈમારતમાં રહેતા હતા, તે ૧૮ માર્ચ, ૨૦૧૨ના રોજ રાત્રે ૧૨-૩૦ વાગ્યે અચાનક જ ધરાશાયી થવા લાગી. આ દુર્ઘટના સમયે ઈમારતમાં ૧૦૦થી વધુ વ્યક્તિ નિદ્રાધીન હતા. પરંતુ બી.એ.પી.એસ.ના આ યુવાનો જાગતા હતા. જીવન-મરણની આ પરિસ્થિતિમાં પોતાના ઘરની ચીજોને સલામત સ્થાને પહોંચાડવાને બદલે તેમણે બીજાની ચિંતા કરી. તેઓ ઈમારતમાં દરેક માળ પર જઈ બારણાં ખખડાવીને લોકોને જગાડવા લાગ્યા. જ્યાં દરવાજા ખૂલતા ન હતા ત્યાં લાતોના પ્રહારથી દરવાજા ખોલ્યા. અચાનક તેમની દૃષ્ટિ એક ઘર પર પડી જ્યાં એક વૃદ્ધા, એક સગર્ભા અને ત્રણ માસની બાળકી બૂમો પાડી રડી રહ્યાં હતાં ! સમય સૂચકતાથી આ બંને યુવાનોએ વાંસ પર ચડી છલાંગ લગાવીને આ ત્રણેય જીવોને બહાર કાઢી સુરક્ષિત સ્થાને પહોંચાડી દીધાં. થોડી જ વારમાં આખી ઈમારત જમીનદોસ્ત થઈ ગઈ. તેમ છતાં એક પણ જાનહાનિ થઈ નહીં. કારણ કે બધાં સૂઈ રહ્યાં હતાં પરંતુ બી.એ.પી.એસ.ના આ યુવાનો આ યુવાનોએ અનેકને જીવનદાન આપી સેવાનું એક અપૂર્વ ઉદાહરણ પૂરું પાડ્યું છે. એ ઈમારતના રહેવાસીઓ આવા સેવાભાવી યુવાનોની ફોજ ઊભી કરનાર બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિ અને તેમના સૂત્રધાર પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પ્રત્યે જીવનભર ઋણી બની રહ્યા છે. ◆

■ પિંકેશ પટેલ : માતૃસેવાનો દૃઢ સંકલ્પ...

ચરોતર પ્રદેશના સીસવા ગામમાં બી.એ.પી.એસ. સત્સંગ-મંડળના યુવાન પિંકેશ પટેલ, સીસવા ક્ષેત્રની બી.એ.પી.એસ. બાળપ્રવૃત્તિના અદના સ્વયંસેવક છે. પિંકેશને બાળપણથી જ પિતાનો સહારો નથી મળ્યો. પિંકેશની નવ વર્ષની ઉંમર હતી ત્યારે માતાની બંને આંખો એક દુર્ઘટનામાં જતી રહી. ત્યારથી લઈને આજ દિન સુધી એટલે કે છેલ્લાં ૧૮ વર્ષથી પિંકેશ પોતાની માતાની લાકડી બનીને પુત્રધર્મ નિભાવી રહ્યો છે. ઘરનો વ્યવહાર ચલાવવા માટે તે ખેતી અને દુકાન તો સંભાળે જ છે, પરંતુ તેની સાથે સાથે ઘરમાં પણ સેવા કરે છે. તેમની માતા કહે છે, ‘આ કળિયુગમાં મને શ્રવણ જેવો દીકરો મળ્યો છે.’ માતાની આદર્શ સેવા કરીને પિંકેશે બી.એ.પી.એસ.માં શીખવાતો ‘માતૃદેવો ભવ’નો આદર્શ ચરિતાર્થ કર્યો છે. ◆

■ નીરલ પટેલ : ભગવત્-શ્રદ્ધાનું અવિચલ બળ

અમેરિકાના શિકાગો નગરમાં બી.એ.પી.એસ.ના ૨૭ વર્ષીય સંનિષ્ઠ યુવક નીરલને નાની ઉંમરમાં બંને કિડનીઓ નિષ્ફળ થઈ ગઈ હતી. તેમાંથી બચાવવા માટે નીરલના શરીરમાં ત્રીજી કિડનીનું પ્રત્યારોપણ કરવામાં આવ્યું.

અત્યાર સુધીમાં નીરલના ૩૭થી વધુ ઓપરેશનો થઈ ગયાં છે. રોજની ૨૮ જેટલી દવાઓ ખાય છે. પરંતુ આ શારીરિક પીડાઓ વચ્ચે પણ નીરલના મુખ પર નિત્ય આનંદ જ ઊભરતો રહે છે ! આવા કઠિન સંજોગોમાં પણ નીરલ બી.એ.પી.એસ. મંદિર દ્વારા આયોજિત વિવિધ સેવાઓમાં સવારે ૮-૦૦થી રાત્રે ૮-૦૦ વાગ્યા સુધી જોડાયેલો જ રહ્યો છે.

પરંતુ પ્રભુએ કસોટી વધુ આકરી બનાવી. એક વાર સેવા દરમ્યાન જ તેને કિડનીનો દુખાવો થતાં હોસ્પિટલમાં દાખલ કરવામાં આવ્યો. નીરલની ત્રીજી કિડની પણ નિષ્ફળ ગઈ હતી. પરંતુ નીરલ જરા પણ વિચલિત ન થયો. ત્રીજી કિડની બદલવાની ફરજ પડતાં તેની માતાની કિડની નાંખવામાં આવી. ઓપરેશન બાદ હોશમાં આવતાં નીરલે પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો આભાર માની, તેના પિતાશ્રીને અહીંથી સીધા મંદિરે લઈ જવા કહ્યું, જેથી તે પોતાની અધૂરી સેવા પૂર્ણ કરી શકે. આ સાંભળતાં જ ડોક્ટર પણ આશ્ચર્યચકિત થઈને કહેવા લાગ્યા ‘ખરેખર, શ્રદ્ધાનો વિજય તારા જીવનમાં દેખાય છે ! તને ધન્યવાદ છે.’

પ્રત્યુત્તરમાં નીરલે કહ્યું, ‘કળિયુગમાં આવી અસંભવિત આધ્યાત્મિકતા અને શ્રદ્ધા સંભવિત કરી છે - પ્રમુખસ્વામી મહારાજે, બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિ દ્વારા ! મારા જેવા અનેક યુવાનોમાં ભગવત્ શ્રદ્ધાનું સિંચન કરીને જિંદગીનાં અનેક યુદ્ધોમાં સમજણ કેળવવા સક્ષમ બનાવ્યા છે. ધન્ય છે, ગુણાતીત સંતોને ! અને ધન્ય છે, બી.એ.પી.એસ. યુવાપ્રવૃત્તિને !’ ◆

(૩)

નેશનલ બાળ કન્વેન્શન ૨૦૧૩ : નોર્થ અમેરિકા National Bal Convention 2013, North America

વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજીના આ યુગમાં ભૌતિકવાદે માઝા મૂકી છે. સાધનોનો અતિરેક છે અને સાધનાનો અભાવ છે. માનવજીવન પ્રકાશની ગતિએ દોડે છે પણ કઈ દિશામાં જવું તેનું જ્ઞાન નથી. આ પરિસ્થિતિથી બાળકો પણ બાકાત નથી. નોર્થ અમેરિકાની બી.એ.પી.એસ. બાળપ્રવૃત્તિ દ્વારા એક ખાસ સર્વેક્ષણ કરવામાં આવ્યું હતું. તેનાં તારણો પરથી સમજાયું કે બાળકો પણ સાંપ્રત સમસ્યાઓના ઝંઝાવાતથી બાકાત નથી. કુસંગ, મોજશોખનાં પ્રલોભનો, અન્ય સાથે પોતાની અને પોતાનાં મા-બાપની સરખામણી કર્યા કરવી, સમોવડિયાના દબાણમાં આવી જવું વગેરે અનેક પ્રકારનાં દૂષણો ખીલતી કળી સમાં બાળકોને તે ખીલે એ પહેલાં જ મુરઝાવી દે છે. જોકે બી.એ.પી.એસ. બાળપ્રવૃત્તિના છત્ર નીચે ખીલી રહેલાં બાળકોમાં આવી સમસ્યાઓની તીવ્રતા ઘણી ઓછી છે, પરંતુ તેમ છતાં તેમનામાં પવિત્ર સંસ્કારોનો આપણો મહાન વારસો સદા જીવંત રહે તે માટે જાગૃતિનો એક શંખનાદ કરવાની આવશ્યકતા છે. એટલે જ, પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીની પ્રેરણાથી આ બાળકોના જીવનમાં એક ઉચ્ચ આધ્યાત્મિક સ્વપ્નની વાવણી કરતું નેશનલ કન્વેન્શન ખૂબ સમસામયિક બની રહ્યું, જેનું શીર્ષક જ જીવનના ઉન્નત શિખરનું દર્શન કરાવતું હતું : એકાંતિક !

જેમણે બાલ્યાવસ્થાની આ સમસ્યાઓનું સમાધાન કરવાનો શ્રેષ્ઠ માર્ગ ચીંધ્યો છે એવા પરમ એકાંતિક સત્પુરુષ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાથેનું દૃઢ જોડાણ અને એકાંતિક ધર્મની દૃઢતામાં છે - તેવા મધ્યવર્તી વિચાર સાથે યોજાયેલું આ કન્વેન્શન માણીને બાળકો તો ખરા જ, પરંતુ મોટાઓ પણ દંગ રહી ગયા.

વિશ્વના લાખો બાળકોના સંસ્કારદાતા પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદ સાથે, યુ.એસ.એ.ના મહાનગર એટલાન્ટા ખાતે બી.એ.પી.એસ. મંદિરના પરિસરમાં નોર્થ અમેરિકાનાં બાળ-બાલિકાઓનું નેશનલ કન્વેન્શન ખૂબ ભવ્યતાપૂર્વક ઊજવાયું. પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામી અને અન્ય સંતોની ઉપસ્થિતિમાં નોર્થ અમેરિકા અને ઓસ્ટ્રેલિયા તથા ન્યૂઝીલેન્ડમાંથી ૨૯૫૦ કરતાં પણ વધારે ૮ વર્ષથી ૧૩ વર્ષનાં બાળ-બાલિકાઓએ આ કન્વેન્શનમાં ભાગ લઈ જીવનનું એક અમૂલ્ય સંભારણું મેળવ્યું. ૫૯૦ કરતાં પણ વધારે સ્વયંસેવકોએ સમગ્ર કન્વેન્શનની સફળતા માટે સેવા કરીને કન્વેન્શનને આનંદદાયક બનાવ્યું. સંવાદની એક નવતર રજૂઆતનાં વિવિધ દૃશ્યોથી કન્વેન્શનનાં તમામ સત્રોને સાંકળી લેવામાં આવ્યાં. સાંપ્રત સમસ્યાઓમાં બાળકો એકાંતિક ધર્મમાં સ્થિરતા કેવી રીતે રાખી શકાય તેનું ગમ્મત સાથે જ્ઞાનસભર માર્ગદર્શન આપવામાં આવ્યું.

■ આગમન દિન

કન્વેન્શનનો પ્રથમ દિન, જુલાઈ ૭, વિવિધ સત્સંગ કેન્દ્રોમાંથી પધારેલા શિબિરાર્થીઓ માટે આગમન દિન હતો. રજિસ્ટ્રેશન બાદ શિબિરાર્થીઓને મંદિરદર્શન માટે લઈ જવાયા અને કન્વેન્શનના વિવિધ વિભાગોની સમજૂતી આપવામાં આવી.

આગમન સાથે પ્રારંભમાં શિબિરાર્થીઓએ સંગીત રંગમંચનો લાભ લીધો. રંગમંચ પરથી વિવિધ રિજિયનમાંથી પધારેલાં બાળકો દ્વારા સંગીત સૂરાવલિઓ પ્રસરી રહી હતી. સંગીત, નૃત્ય અને સંવાદના માધ્યમ દ્વારા બાળકોને કન્વેન્શનના વિષય - ‘એકાંતિક થઈએ’નો પરિચય આપવામાં આવ્યો. કાર્યક્રમમાં પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પ્રત્યે શિબિરાર્થી બાળકોના પ્રેમનાં સ્પંદનો અનુભવાતાં હતાં. વળી, નાનાં નાનાં બાળકો દ્વારા થતી અદ્ભુત રજૂઆતોમાં તેમની મહેનત ઊડીને આંખે વળગતી હતી.

કન્વેન્શનના આજના સૌપ્રથમ સોપાનમાં નાના નાના વૃંદમાં વિભાજિત શિબિરાર્થીઓના મુખ્ય કાર્યકરોની સભા યોજાઈ. કન્વેન્શનની કેટલીક પાયાની કાર્યલક્ષી માહિતીનું માર્ગદર્શન અપાયું. મહંત સ્વામીએ પણ પ્રેરક વચનો કહ્યાં.

પ્રથમ દિનની સાંજનો અંત સંવાદના એક દૃશ્ય સાથે થયો, જેમાં આવનારા દિવસોમાં થનાર કાર્યક્રમની ઝાંખી આપવામાં આવી. સંવાદનાં મુખ્ય પાત્રો અક્ષર, યોગી, કીર્તન અને ચિરાગનો પરિચય આપવામાં આવ્યો. આ બધાં જ પાત્રોએ તેમને મૂંઝવતા સાંપ્રત પ્રશ્નોની પ્રભાવક રજૂઆત કરી, જે સૌ બાળકોને સ્પર્શી ગઈ. એક બાળમિત્રના ટૂંકા હાઉસમાં રોકાયેલા બાળકના બાળમાનસમાં પ્રવેશતી નબળાઈઓ ખૂબ પ્રભાવક રીતે પ્રસ્તુત થઈ. સંવાદના દૃશ્યના ભાગરૂપે પ્રવક્તા દ્વારા બાળકોને પ્રશ્ન પુછાયા, જેના ઉત્તર શિબિરાર્થીઓએ તેમને અપાયેલી નોંધપોથીમાં લખ્યા. સંવાદનાં દૃશ્યો પછી પૂજ્ય અમૃતનંદનદાસ સ્વામીએ Right Answer When Facing Hard Question ‘અધરા પ્રશ્નોના સરળ જવાબો’ પ્રસ્તુત કર્યા અને ત્યારબાદ બાળકો ચેષ્ટાગાનમાં જોડાયા.

■ દ્વિતીય દિન

સવારના સત્રની શરૂઆત શિબિરાર્થીઓએ મંદિરમાં આરતી અને નીલકંઠવર્ણીના અભિષેકથી કરી. આગલા દિવસે સાંજે શરૂ થયેલો સંવાદ ફરીથી શરૂ થયો. એક સુંદર પાત્ર દ્વારા બાલ્યાવસ્થાથી કિશોરાવસ્થામાં પ્રવેશતાં પૂર્વ પ્રવેશતાં દૃષણો રજૂ થયાં. પ્રવક્તાએ ‘જે અગત્યનું છે તો તેમાં ઓછું અને જે અગત્યનું નથી તેમાં વધારે સમય આપવો’ તેવી માનસિકતાથી બચવા પ્રશ્નોત્તર કર્યા. ‘કોઈ શું કહેશે’ તે ભયમાં પોતાની સત્સંગી તરીકેની ઓળખ છુપાવવા પ્રયત્ન કરતા બાળક અને ખુમારી સાથે સત્સંગની અસ્મિતા રાખનારા બાળકની રજૂઆત પણ અસરકારક રીતે થઈ. સમોવડિયાની ધાક-ધમકીમાં સત્સંગ ગૌણ કરનારા, નીડરતાથી નબળાની રક્ષા કરનારા બાળકોની રજૂઆતને અંતે ‘સ્વામીશ્રી સાથેનું મારું જીવન કેવું હોવું જોઈએ?’ એ અંતર્દૃષ્ટિ ભરી રજૂઆત સૌને સ્પર્શી ગઈ.

સંવાદનાં દૃશ્યો પછી પૂજ્ય મહંતસ્વામી મંચ ઉપર પધાર્યા અને બાળકોએ ફૂલહારથી તેઓનું સ્વાગત કર્યું. બાળકોએ તેમને કન્વેન્શનનું એક ઓળખચિહ્ન (Badge) અર્પણ કર્યું, જે મહંત સ્વામીએ સમગ્ર કન્વેન્શન દરમ્યાન ધારણ કરીને તેઓ પણ સૌની જેમ એક શિબિરાર્થી જ છે તેવી નમ્રતાનાં દર્શન કરાવ્યાં. પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ પૂર્વે રજૂ થયેલાં સર્વ દૃષણોને ટાળવા ‘મારે સ્વામીને રાજી કરવા છે’ એવી સતત અંતર્દૃષ્ટિનું સુંદર માર્ગદર્શન આપ્યું. અંતમાં પોતાના સ્વાનુભવનો નિયોડ આપતાં કહ્યું કે, I can, I Will, I Must, પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને રાજી કરીશ - એવો દૃઢ વિચાર હશે તો તેઓ હંમેશાં આપણી સાથે છે તેવો અનુભવ થશે જ.

ત્યારબાદ પ્રથમ વર્ગ શરૂ થયો. એકાંતિક થવાની પ્રક્રિયામાં પ્રથમ પગથિયું છે ધર્મ. ‘ધર્મ’ના વર્ગમાં એક રમત દ્વારા ચોરી, છેતરપિંડી, ખોટું બોલવું, નિયમ-ધર્મ તોડવા વગેરે અધર્મ છે તેનો સંદેશ અપાયો. પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ એકાંતિક ધર્મના પ્રથમ આધારસ્તંભ વિષયક ‘Do what is right’ પ્રવચનનો લાભ આપ્યો. પ્રવચનના વિષયને આગળ વધારતાં એક રમત દ્વારા ધર્મ અને અધર્મનો વિવેક શીખવવામાં આવ્યો.

સંવાદની સાંકળ પુનઃ આગળ વધી અને એક નવા દૃશ્યમાં બાળકના નબળા વિચારોનો વધુ એક પ્રસંગ રજૂ થયો. પૂજ્ય સ્નેહમુનિદાસ સ્વામીએ આ દૃશ્યની મધ્યમાં ધર્મ વિષયક ‘What is the right thing’ની ટૂંકી સમજૂતી આપી. ત્યારબાદ રોબર્ટ ફોસ્ટના ‘I took the road less traveled by’ નામના પ્રેરણાત્મક કાવ્યનું વાંચન કરાવાયું.

ટૂંકા વિરામ પછી બીજા વર્ગનો આરંભ થયો જેમાં સરળ શૈલીમાં એકાંતિક ધર્મના બીજા આધારસ્તંભ ‘જ્ઞાન’ની સમજૂતી આપવામાં આવી. એક પ્રેઝન્ટેશન દ્વારા ‘હું આત્મા છું’ અને અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની વાત - ‘આપણે તો અક્ષરધામમાં જાવું છે એવો એક સંકલ્પ રાખવો’ની દૃઢતા કરાવવામાં આવી.

પુનઃ સંવાદ આગળ વધતાં એક બાળકે તેના મિત્ર લોનીની વર્ષગાંઠ નિમિત્તે લાવેલી કપકેક ખાધી નહીં અને એની પાછળનો વિચાર એના વર્ગશિક્ષકને સમજાવ્યો અને પોતાની ઓળખ અકબંધ રાખી. જ્ઞાનસંબંધી પ્રાયોગિક વિચાર આપતાં પ્રવક્તાએ પોતાની આત્મા તરીકેની ઓળખ જ સાચી ઓળખ છે અને તે યોગીની જેમ વર્તનમાં આવી શકે છે તે સમજાવ્યું. આ આત્મવિચારની દૃઢતા પૂજ્ય અનંતમંગલદાસ સ્વામીએ દૃશ્ય-શ્રાવ્ય માધ્યમ દ્વારા સમજાવી અને આપણે સિંહ બનવા આ શિબિરમાં આવ્યા છીએ તેવો બળપ્રેરક સંદેશ આપ્યો.

એક વિશેષ કાર્યક્રમમાં બાલિકાઓએ પોતાની ભક્તિ અદા કરતાં જાતે તૈયાર કરેલી વાનગીઓનો અન્નકૂટ મંદિરમાં ઠાકોરજી સમક્ષ ધરાવ્યો.

■ સંધ્યાસત્ર

સંધ્યાસત્રની શરૂઆત એક રંગીન ચિત્રપટ પર એનિમેશન દ્વારા થઈ, જેમાં સંવાદનાં બાળપાત્રો એક મોલમાં જઈ ચડ્યાં. ત્યાં બાળકોએ એકાંતિક ધર્મના મહત્ત્વના સોપાન ‘ગુરુઆજ્ઞા’ વિશે સુંદર છણાવટ કરી.

પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી પોતાના ગુરુ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજની આજ્ઞામાં કેવી રીતે ભળી ગયા તેના પ્રેરક પ્રસંગો પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ વર્ણવ્યા અને આવા પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુદેવ પ્રત્યેનો પ્રેમ અને સંપૂર્ણ વિશ્વાસ આપણને સૌને અક્ષરધામમાં લઈ જશે તેવી પ્રેરણા આપી.

મોલમાં સંવાદનાં પાત્રો પૈકી એક બાળકના તિલક-ચાંદલાની એક સ્થાનિક કર્મચારીએ મશ્કરી કરી. અસ્મિતા ભરેલો એ બાળક પેલા કર્મચારી પર ગુસ્સો કરીને બહાર નીકળી ગયો. આવી પરિસ્થિતિમાં સ્વામીશ્રી ગુસ્સે થવાને બદલે કેવી રીતે વર્તે? તેની રજૂઆત અન્ય બાળપાત્રોએ સુંદરતાથી કરી સમજાવ્યું. સૌને સ્વામીશ્રીની જેમ સહિષ્ણુ બનવાની પ્રેરણા મળી. પૂજ્ય અક્ષરમૂર્તિદાસ સ્વામીએ સ્વામીશ્રીના પ્રેરક પ્રસંગો કહીને સ્વામીશ્રી જેવા એકાંતિક બનવાની શીખ આપી.

ત્યારબાદ એકાંતિક બનવાનું ભાવનૃત્ય રજૂ થયું. જેમાં ધર્મ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય અને ભક્તિની સરળ વ્યાખ્યાઓ કીર્તનની પંક્તિઓમાં ગુંજતી હતી. સંવાદના આજના છેલ્લા દૃશ્યમાં નકારાત્મક વિચારો તરફ વળતા બાળકના જીવનમાં પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી પ્રવેશ્યા અને તે હકારાત્મકતા તરફ વળવા લાગ્યો તેની અદ્ભુત રજૂઆત હતી.

■ તૃતીય દિન

સવારનો કાર્યક્રમ એક નવતર શૈલીમાં રજૂ થયો. એટલાન્ટા મંદિરના પ્રાંગણમાં આવેલા નાનકડા સરોવરમાં મંદિર પ્રતિબિંબિત થાય છે. આ સરોવરમાં એક કલાત્મક નાવ શોભતી હતી અને તેના સુકાની તરીકે ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની મૂર્તિ પધરાવવામાં આવી હતી. નાવની પશ્ચાદ્ભૂમાં મંદિરનાં ઉત્તુંગ શિખરો પર બી.એ.પી.એસ.ના ધ્વજ લહેરાઈ રહ્યા હતા. પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ સમક્ષ આરતી કરી અને સૌ તેમાં જોડાયા. બે બાળ પ્રવક્તાઓએ માયાના દરિયામાં આપણી જીવન-નાવ મધદરિયે અટવાઈ છે અને ઝંઝાવાતોમાં દિશાહીન બની છે એવી પ્રતીકાત્મક રજૂઆત કરી. માયાના આ જંગમાં જીતવા શું કરવું પડે તેનું વાસ્તવિક માર્ગદર્શન પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામીએ આપ્યું. પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના અંતર્યામીપણાના વિવિધ પ્રસંગો દ્વારા સમજાવ્યું કે તેમના ગમતામાં ભળી જવું તેમાં જ આપણા જીવનનું શ્રેય છે.

કાર્યક્રમમાં આગળ વધતાં બાળ-પ્રવક્તાઓએ સ્વામીની વાત ‘કેટલાકને મન રમાડે છે અને કેટલાક મનને રમાડે છે આ વાત નિત્યે વિચારવા જેવી છે’ તે સિદ્ધાંતને પુષ્ટ કરતો શલૂક પગીનો પ્રસંગ કહ્યો. આપણે પણ મન સામેની લડાઈ કેવી રીતે જીતી શકીએ તેની સુંદર છણાવટ થઈ.

ત્યારબાદ મંદિરનાં પગથિયાં, નાવ અને પ્રાંગણમાં ઢોલ, કરતાલ અને હલેસાં સાથે બાળકોએ ભાવવાહી નૌકા નૃત્ય પ્રસ્તુત કરીને સમજાવ્યું કે માયાના સાગરમાં પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુહરિ સ્વામીશ્રીને સુકાની બનાવીએ તો સહજતાથી અક્ષરધામ પહોંચી જવાય. બાળપ્રવક્તાઓએ ‘આપણે તો અક્ષરધામમાં જાવું છે એવો એક સંકલ્પ રાખવો’ તે સ્વામીની વાત બોલાવીને યથાર્થ સંકલ્પ કરાવ્યો અને મંદિરનાં પગથિયાં ઉપરથી ‘Be Ekantik’ લખેલો એક મોટો પ્રતીકાત્મક કુગ્ગો ગગનમાં વહેતો મૂક્યો.

ઉપરોક્ત કાર્યક્રમ બાદ સત્રને આગળ વધારતાં કાર્યક્રમો નારાયણ સભાગૃહમાં રજૂ થયા. સંસ્થાનાં વિવિધ મંદિરોમાં ચાલતાં બાળમંડળો અને તે મંદિરની આસપાસ આવેલાં જોવાલાયક સ્થળોને આવરતી ટૂંકી વીડિયો બતાવવામાં આવી. કાર્યક્રમના પુનઃ પ્રારંભે જીવન સહેલાઈથી માયારૂપી ક્યારાનું ઘર બની જાય છે અને તે ક્યારાને બહાર કાઢવા માટે ગુણાતીત ગુરુ જ મદદ કરી શકે છે - તેવા સંદેશ સાથે સમૂહમાં શિબિરાર્થીઓને કેટલીક વિશેષ એક્ટિવિટી કરાવવામાં આવી.

એકાંતિક ધર્મમાં વૈરાગ્યનું મહત્ત્વનું સ્થાન છે. પૂજ્ય પ્રિયેશમુનિદાસ સ્વામીએ દૃષ્ટાંતો દ્વારા વૈરાગ્યની સમજૂતી આપીને જીવનમાં સાદગીનો મહિમા કહ્યો. સાદગી એ વૈરાગ્યનું પ્રથમ પગથિયું છે અને જીવનનું અંતિમ પગથિયું અક્ષરધામ છે તેમ સમજાવ્યું.

પુનઃ સંવાદની સાંકળ આગળ વધી. એક દૃશ્યમાં વાસ્તવિકતાનું દર્શન કરાવતાં બાળક અને તેનાં મા-બાપના સંબંધો વિશે સુંદર રજૂઆત થઈ. નિત્યમુનિદાસ સ્વામીએ Cut & Paste અર્થાત્ માયા સાથે છેડો ફાડીને સ્વામીશ્રી સાથે જોડવાની પ્રક્રિયા તે સાદગી છે તેમ પ્રસંગો દ્વારા સમજાવી સૌને પ્રતિજ્ઞા લેવડાવી અને માતા-પિતાને આદર આપવાની શીખ આપી. સત્રના અંતમાં શિબિરાર્થીઓને સાદું જીવન જીવવાના સરળ ઉપાયો દર્શાવતી LIFE રમત રમ્યા.

સત્રના અંતમાં એક વિશિષ્ટ એક્ટિવિટીનું આયોજન હતું, જેમાં શિબિરાર્થીઓએ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજને પત્ર લખીને ભક્તિ અદા કરી. પત્રમાં તેમણે સ્વામીશ્રી પ્રત્યે અંતરનો ભાવ શબ્દોના માધ્યમ દ્વારા પ્રદર્શિત કર્યો. કેટલાંક બાળકોએ સ્વામીશ્રી રાજી થાય, માતા-પિતાની આજ્ઞામાં રહેવાય, નિયમ-ધર્મ દૃઢ રહે અને એકાંતિક ધર્મ દૃઢ થાય તેવી પ્રાર્થના કરી, તો વળી કેટલાંક બાળકોએ સારામાં સારું ભણીને સ્વામીશ્રી અને સંસ્થાનું ગૌરવ વધે તેવા આશીર્વાદ માંગ્યા, તો ઘણાંએ સ્વામીશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય સારું રહે તે માટે વિશેષ ભક્તિ કરવાનો નિયમ લીધો. પત્રો વાંચતાં એક બાબત સ્પષ્ટ દેખાતી હતી કે સ્વામીશ્રી સાથે આ બાળકોનું અલૌકિક જોડાણ છે. અન્ય એક એક્ટિવિટીમાં જુદા જુદા નવ રંગની રેતીનાં દૃષ્ટાંત દ્વારા નવધા ભક્તિનો પરિચય આપવામાં આવ્યો અને સ્વામીશ્રીને રાજી કરવા માટે ‘સારામાં સારું ભણવું એ પણ એક ભક્તિ છે’ એવો સંદેશ આપવામાં આવ્યો.

■ મધ્યાહ્ન સત્ર

આ સત્ર શરૂ થયું ત્યારે ભારતમાં સારંગપુર ખાતે મધ્યરાત્રિનો સમય હતો. સૌના જીવનપ્રાણ સ્વામીશ્રી હજી જાગ્રત હતા. સ્વામીશ્રી બધા બાળકોને જીવનની ચિરંતમ અને અમૂલ્ય સ્મૃતિ આપવા કૃપા કરવાના હતા. એક તરફ સ્વામીશ્રી બાળકોના કાર્યક્રમને જીવંત નિહાળી રહ્યા હતા અને બીજી તરફ બાળકો સ્વામીશ્રી સાથે વીડિયો કોન્ફરન્સ દ્વારા જોડાયાં અને સર્જયો દ્વિ-દિશ પ્રેમપ્રવાહ ! સ્વામીશ્રીને બાળકોએ વધાવ્યા તો સામે સ્વામીશ્રીએ પણ સૌને વધાવ્યા. સ્વામીશ્રી વ્હીસલ વગાડી સૌના સુકાની બન્યા અને દિવ્ય સ્મૃતિ આપી. સ્વામીશ્રીએ બાળકોની પ્રાર્થના સ્વીકારી સૌને એકાંતિક બનાવવાનો કોલ આપ્યો. કેવી અપાર કરુણા ! શિબિરાર્થીઓ પોતાના સ્થાને ઊભા થઈ સ્વામીશ્રીની દિવ્ય દૃષ્ટિને ઝીલતાં રહ્યા. નારાયણ સભાગૃહમાં નારાયણસ્વરૂપ સંતનું જાણે પ્રત્યક્ષ અવતરણ થયું ! અને અવર્ણનીય ઉત્સાહથી સૌનાં હૈયાં ઊભરાઈ રહ્યાં. સૌ શિબિરાર્થીઓ નિઃશંક આ દિવ્ય સ્મૃતિને જીવનભર વાગોળતા રહેશે.

સત્રમાં આગળ વધતાં સંવાદના નવા અંકની શરૂઆત થઈ. સંવાદનાં પાત્રોની પ્રેરક રજૂઆતો બાદ પૂજ્ય ઘનશ્યામસેવાદાસ સ્વામીએ ‘આપણે તો સ્વામીશ્રીનાં સિંહ સંતાનો છીએ, આપણે સ્વામીશ્રીને રાજી કરવા છે,’ એમ કહીને બજાર વસ્તુઓ ન ખાવા વિષે સમજ આપી.

સંવાદની ત્યાર પછીની રજૂઆત ખૂબ લાગણીશીલ હતી. શિબિરાર્થીઓનાં હૈયાં હયમયી ઊઠ્યાં અને સૌને અંતર્દૃષ્ટિ થઈ : ‘સ્વામીશ્રી સાથેનું મારું જીવન કેવું હોય ?’ સૌ સ્વામીશ્રીના આદર્શ બાળક બની સ્વામીશ્રી સાથે ગાઢ જોડાણ કરવા કૃતનિશ્ચય બન્યા. સૌ આ દિશામાં આગળ વધે તેવા સ્વામીશ્રીના આશીર્વાદ રજૂ થયા.

બાદ સ્વામીશ્રીના સંકલ્પ સમા રોબિન્સવીલ ખાતે બંધાનાર અક્ષરધામની માહિતી આપતી વીડિયો બતાવવામાં આવી. અંતમાં પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ આશીર્વાદ આપતાં કહ્યું કે અમેરિકાની નવી પેઢીમાં સત્સંગ ખૂબ વધે તે માટે સ્વામીશ્રી સંકલ્પ કરીને સ્વામીશ્રી અક્ષરધામ રચી રહ્યા છે,

સ્વામીશ્રીએ આશીર્વાદ આપ્યા છે, આપણે સૌએ એમાં ભળવાનું છે, અક્ષરધામથી આપણને સૌને ખૂબ પ્રેરણા મળશે. અહીંના ઈન્ડો-અમેરિકન લોકોને પ્રેરણા મળશે ને સૌને ગૌરવ થશે અને પોતાનું મનાશે.

■ સંધ્યા સત્ર - વિદાય સભા

વિદાયસભાનો આરંભ આભારવિધિ માનવંતા મહેમાનોના સ્વાગતથી થયો. નાનાં નાનાં બાળકોએ સ્ટેજ ઉપર આવીને સૌ શિબિરાર્થીઓને બળપ્રદ વાતો અને પ્રસંગો કહ્યાં. કપરા સંજોગોમાં પણ નિયમ-ધર્મમાં નિશ્ચલ રહેતાં બાળ-બાલિકાઓના પ્રેરણાપ્રદ પ્રસંગોએ સૌમાં આત્મબળ જગાવ્યું અને અહેસાસ કરાવ્યો કે અમે ભલે નાનાં છીએ પણ સ્વામીશ્રી અમારી સાથે છે એટલે એકાંતિક જરૂર બનીશું.

વિદાય આશીર્વાદ આપતાં પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ કહ્યું, ‘અઢી દિવસની શિબિરમાં જે શીખ્યાં છીએ, જીવ્યાં છીએ તે જીવનભર જીવવાનું છે. I Can become Ekantik કારણ કે સ્વામીશ્રી આપણી સાથે છે, I Will become Ekantik કારણ કે આપણે સ્વામીશ્રીનાં થયાં છીએ અને I Must become Ekantik કારણ કે આ સ્વામીશ્રીનું મિશન છે. સ્વામીશ્રી સાથે જેટલાં જોડાયેલાં રહીશું એટલી રક્ષા થશે. આપણે એમનો રાજીપો મેળવવાનો છે. એકાંતિક થવું એટલે સ્વામીશ્રી માટે જીવવું.’

અંતમાં, એટલાન્ટા મંદિરના ઈતિહાસમાં સૌપ્રથમવાર મહાઆરતી થઈ. પૂજ્ય સંતો નગારાં અને જાલરો, કિશોરો શંખ અને ઘંટનાદ, ૬ યુવકો મહાઆરતી અને પૂજ્ય મહંત સ્વામી અને સંતો આરતી લઈ મંચ ઉપર તથા હરિભક્તો સભાગૃહમાં મહાઆરતીમાં જોડાયા. એક ઐતિહાસિક પ્રસંગના સૌ સાક્ષી બન્યા.

આરતી બાદ બે બાળપ્રવક્તાઓએ શિબિરની પૂર્ણાહુતિ કરાવતાં શુદ્ધ અને પવિત્ર જીવનથી અનેકનું જીવન ઉજાળવા સ્વામીશ્રીનો પ્રકાશ સૌને પહોંચાડવાનો દિવ્ય સંદેશ આપ્યો. અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીનાં ત્રિકાલાબાધિત વચનોને સાર્થક કરતાં અવતારો કરતાં પણ તેજસ્વી એવાં આ સ્વામીશ્રીનાં બાળકોનાં મુખ ઉપર પ્રાપ્તિનો આનંદ જળહળી રહ્યો હતો. અંતે, ‘અમે સૌ સ્વામીના બાળક’ પ્રાર્થનામાં સૌ જોડાયાં ને સ્વામીશ્રીને જીવન સમર્પિત કરવા કટિબદ્ધ થયાં.

શિબિરાર્થીઓ નારાયણ સભાગૃહમાંથી બહાર આવ્યા ત્યારે પ્રાંગણમાં બેઠકવ્યવસ્થા પ્રમાણે સૌએ સ્થાન ગ્રહણ કર્યું. મંદિરનાં શિખરો વિવિધરંગી પ્રકાશથી ‘એવા મારા સ્વામી’ના તાલે શોભાયમાન થયાં અને મંદિરનાં શિખરોની ઉપર આતશબાજીથી આકાશ પ્રકાશિત થઈ ગયું. આ સમયે પ્રાંગણમાં ‘Be Ekantik’ મુદ્રિત સ્વયંપ્રકાશિત કુગ્ગા ગગનમાં ઊંચે ઊંચે એકાંતિક ધર્મનો પ્રકાશ રેલાવવા પ્રક્ષેપિત થયાં. આતશબાજી માણીને વિદાય લઈ રહેલાં સૌનાં હૈયે ‘Be Ekantik’ ‘એકાંતિક થઈએ’નો નાદ ગુંજતો હતો. ◆